अप

मिहिर

क्या तुम जानते हो?

– *अप* को इस साल की सर्वश्रेष्ठ एनीमेशन फिल्म व संगीत का ऑस्कर पुरस्कार मिला है।

– इसके साथ ही *अप* सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए भी नामांकित हुई थी। यह सम्मान पाने वाली *अप* दूसरी एनीमेशन फिल्म है। पहली फिल्म थी *ब्यूटी एंड द बीस्ट* जो 1991 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म ऑस्कर के लिए नामांकित हुई थी।

– फिल्म के निर्देशक को घर के ऊपर गुब्बारे लगाकर घर सहित उड़ जाने का मज़ेदार ख्याल दरअसल असल ज़िन्दगी की परेशानियों से ऊबकर आया था।

एक पुरानी फिल्म है *मिस्टर इंडिया*। शायद तुमने देखी हो। मुझे बहुत पसन्द है यह फिल्म। इसके कई मज़ेदार किस्सों में से एक किस्सा वो है जब हीरो हीरोइन को अपने घर की खूबियाँ बताता है, “क्या कमरा है मेमसाहब! कमरा, कमरे के आगे टैरेस, टैरेस के आगे गार्डन, गार्डन के आगे समन्दर। वाकई अच्छा नज़ारा है ना!” लेकिन ज़रा सोचो, अगर इस टैरेस (छत) और गार्डन (बगीचे) की जगह एक ऊँची इमारत खड़ी कर दी जाए तो घर में रहने वालों को कैसा लगेगा?

और अगर घर में रहने वाला एक अकेला बूढ़ा हो तो कैसा लगेगा? बुरा लगेगा ना उसके लिए सोचकर। कुछ ऐसी ही कहानी है *अप* फिल्म की। पर, *अप* एक उदास फिल्म नहीं है। फिल्म में यह बूढ़ा अपने घर के ऊपर ढेर सारे हीलियम गैस से भरे गुब्बारे लगाकर घर सहित उड़ जाता है। अब तुम कहोगे कि ऐसा कैसे हो सकता है? अरे भई, *अप* एक कार्टून फिल्म है और कार्टून फिल्म में उड़ने के लिए खुला आसमान होता है। सो कुछ भी हो सकता है।

इस फिल्म को पिक्सार एनिमेशन ने बनाया है। फिल्म में खड़ूस से दिखते बूढ़े कार्ल फ्रेडरिकसन को बचपन से ही रोमांचकारी यात्राओं पर जाने का बड़ा शौक होता है। उसकी पत्नी और वो हमेशा एक जगह साथ-साथ जाने का सपना देखा करते थे। वह सपनीली दुनिया है – पैराडाइज़ फॉल जो दक्षिण अमरीका में कहीं है। अफसोस कि फ्रेडरिकसन की पत्नी इस सपने के पूरा होने से पहले ही उन्हें छोड़कर चली जाती है।

अब फ्रेडरिकसन अकेले हैं। उनके घर के आसपास बड़ी इमारतें बन रही हैं। सभी उन्हें वृद्धाश्रम चले जाने की सलाह देते हैं। लेकिन वे अपना घर छोड़कर नहीं जाना चाहते। इस घर में उनकी पत्नी की यादें जो बसी हैं। और फिर एक दिन वे अपने घर सहित उड़ जाते हैं। अपने सपनों की दुनिया की ओर...

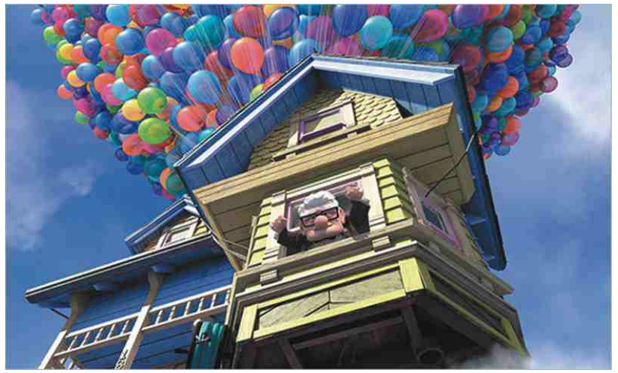

इस यात्रा में गलती से उनके साथ एक छोटा-सा लड़का रसेल भी आ गया है। रसेल भी रोमांचकारी यात्राओं का शौकीन है। अब दोनों उड़ रहे हैं पैराडाइज़ फॉल की ओर। रास्ते में आँधी-तूफान हैं, मुश्किलें हैं। शुरू में फ्रेडरिकसन बार-बार रसेल से पीछा छुड़ाने की कोशिश करते हैं। लेकिन धीरे-धीरे उनमें दोस्ती हो जाती है। मुसीबतों को पार करते वे

उस जगह आ पहुँचते हैं जहाँ से उन्हें दूर पहाड़ के दूसरे कोने पर पैराडाइज़ फॉल नज़र आता है। लेकिन इसके पहले भी बहुत कुछ होता है। रास्ते में उन्हें एक रंग-बिरंगी, खूब बड़ी चिड़िया मिलती है। अपना नन्हा उस्ताद रसेल उसका नाम रखता है केविन। वह उसे चॉकलेट खिलाता है और उसका दोस्त बन जाता है। केविन अपने खोए बच्चों की तलाश में है और रसेल उसकी मदद करना चाहता है।

फिर उन्हें मिलता है एक बोलने वाला कुत्ता – डग। डग केविन को अपने साथ ले जाना चाहता है। डग के गले में एक ऐसा पट्टा है जिससे कुत्ते भी इन्सानों की आवाज़ में बोल सकते हैं। उसे ये पट्टा पहनाया है चार्ल्स मंटस ने। चार्ल्स वही खोया हुआ हीरो है जिससे प्रभावित होकर बचपन में मिस्टर फ्रेडरिकसन ने रोमांचकारी यात्राओं के सपने देखे थे। चार्ल्स उन्हें अपने उड़ने वाले गुब्बारेनुमा जहाज़ में दावत के लिए बुलाता है। यहाँ दावत का सारा इन्तज़ाम बोलने वाले कुत्तों के हाथों में है।

बातों-बातों में पता चलता है कि चार्ल्स डग केविन को पकड़ना चाहता है और उसे अपने साथ सबूत के तौर पर वापस ले जाना चाहता है। इसीलिए उसने तमाम कुत्तों को केविन के पीछे लगा दिया है। अब चार्ल्स की असलियत खुल चुकी है। और यहाँ से शुरू होता है आसमान में उठा-पटक का एक रोमांचकारी सफर। जिसमें एक ओर हैं चार्ल्स के बोलने वाले कुत्तों की फौज और दूसरी तरफ है फ्रेडरिकसन, रसेल, केविन और डग की चतुर चौकड़ी। कुत्तों की फौज ताकतवर है लेकिन अकल से थोड़ी पैदल है। चतुर चौकड़ी चार्ल्स को खूब नाच नचाती है और आखिर में केविन अपने प्यारे बच्चों तक पहुँच जाती है। फ्रेडरिकसन रसेल के साथ वापस अपनी दुनिया लौट जाते हैं और ठाठ से धूप में बैठे आइसक्रीम खाते हैं। वे रसेल के प्यारे दादा और डग के मास्टर बन जाते हैं।

बोमन ईरानी को इस साल के सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का

फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

इस अवसर पर उन्होंने कहा– मेरी माँ अकेले ही पिछले पचास सालों से मेरी परवरिश कर रही हैं। हम अलेक्ज़ेण्डर सिनेमा के बिलकुल नज़दीक रहा करते थे। होमवर्क के बाद माँ कहा करती, “जाओ, अब एक फिल्म देख आओ।” मैं जाता और फिल्म देख आता। मुझे याद है एक बार मैं फिल्म *प्यासा* देखकर आया था। अगले दिन माँ ने मुझे फिर कहा, “जाओ, अब फिल्म देख आओ।” मैंने कहा, “माँ, *प्यासा* तो मैंने कल ही देख ली।” उन्होंने कहा, “तो आज उसके गीत सुनने जाओ।” अगले दिन फिर वही – माँ ने कहा, “पढ़ाई कर ली तो अब फिल्म देख आओ।” मैंने कहा, “माँ तीसरी बार?” माँ ने कहा, “इस बार सिनेमटोग्राफी के लिए देखो।” इस तरह माँ ने सिनेमा को समझने-देखने का सलीका दिया मुझे। मैं यह पुरस्कार अपनी माँ को समर्पित करता हूँ।